श्री विद्याचरण शुक्ल : जी हां । सभापति महोदय, जहां तक एडवान्स स्ट्राइक एयरक्रैफ्ट्स का सवाल है जब इसके बारे में सोच विचार प्रारम्भ किया गया, उसको बनाने के लिए तब भी विचार यही था कि यह एट्टीज मे काम मे लाया जायेगा । अभी वर्तमान मे जो हमे अपनी सुरक्षा के लिये आवश्यकता है उस की पूर्ति हम अपने ढग मे कर रहे है । तो यह जो हमे बनाना है उसके लिए हमारा इरादा यह है कि एट्टीज मे हम इस चीज को ले आये । यही हमारी उसमे योजना है और हम कोशिश इस बात की कर रहे है कि इसको हम शीघ्रातिशीघ्र पूरा कर लें क्योंकि काम इतना जटिल है कि उसमे आठ, दस साल लगना साधारण बात है बडे बडे देशो मे जहा पहले से यह इंडस्ट्री कायम है इतना समय वहा भी लगता है । फिर भी हम चाहते है कि जल्दी से जल्दी हम इस काम को पूरा कर ले ।

डा० भाई महावीर : आई० सी० बी० एम० का खतरा और पाकिस्तान की तैयारी को देखते हुए क्या आप की यह रफ्तार काफी है ?

श्री सभापति उसी को देखते हुए उन्होंने जवाब दिया है ।

श्री विद्याचरण शुक्ल : सभापति महोदय, इस के बारे मे मै समझता था कि माननीय सदस्य महोदय इस बात को समझ लेंगे कि अभी तत्काल जो हमे खतरा था या उसके लिये जो हम को सुरक्षा की तैयारी करनी है उस का इतजाम तो हम को करना ही है, लेकिन इस के ऊपर निर्भर कर के हम अगले दस साल का इतजाम नही कर सकते । तो हम उस के लिये तैयारी अलग से कर रहे है । उस तैयारी मे इस प्रोजेक्ट का कोई विशेष सबध नही है । यह तो हमारे लिए भविष्य की बात है ।

भारतीय प्रतिनिधिमडलो द्वारा विदेशों का दौरा

*635. **श्री डी० के० पटेल:**
श्री ना० कृ० शेजवलकर :
श्री मानसिंह वर्मा : †
श्री प्रेम मनोहर :
श्री दत्तोपन्त ठेगड़ी :
डा० भाई महावीर :

क्या **विदेश** मत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि

(क) 1971–72 के वर्ष के दौरान उनके मत्रालय द्वारा प्रायोजित कितने सरकारी और गैर-सरकारी प्रतिनिधिमडलो ने किन-किन देशो का दौरा किया,

(ख) उपरोक्त प्रत्येक प्रतिनिधिमडल पर कुल कितना व्यय हुआ, और

(ग) उनके द्वारा जिन-जिन देशो का दौरा किया गया उन पर इन दौरो का क्या प्रभाव पडा ?

‡[VISITS OF INDIAN DELEGATIONS TO FOREIGN COUNTRIES

*635 SHRI D. K. PATEL:
SHRI N. K. SHEJWALKAR:
SHRI MAN SINGH VARMA:
SHRI PREM MANOHAR:
SHRI D THENGARI:
DR BHAI MAHAVIR:

Will the Minister of EXTERNAL AFFAIRS be pleased to state:

(a) the number of official and non-official delegations sponsored by his Ministry who had visited foreign countries during the year 1971-72 alongwith the names of the countries visited by them;

(b) the total amount of expenditure incurred on each of the said delegations, and

(c) the impact of these visits on the countries so visited by them?]

†The question was actually asked on the floor of the House by Shri Man Singh Varma

‡[ ] English translation.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI SURENDRA PAL SINGH):

(a) and (b) A statement, based on information available, is placed on the Table of the House. [*See* Appendix LXXXIII, Annexure No. 73].

(c) The impact of each visit naturally differs according to the purpose. Broadly, however, it may be stated that State goodwill visits serve the purpose of exchanging views and strengthening relations with other countries; delegations for bilateral or multilateral talks are generally for some specific purpose, such as negotiating or reviewing an agreement, or discussion of specific bilateral or multilateral problems; all such visits have the common objective of promoting our national interest in various ways.

†**विदेश मंत्रालय म राज्य मंत्री (श्री सुरेन्द्र पाल सिंह)** (क) और (ख) सुलभ सूचना के आधार पर एक विवरण तैयार किया गया है, जो सदन की मेज पर रख दिया गया है । [**देखिये** परिशिष्ट 83 अनुपत्र संख्या 73]

(ग) हर यात्रा का प्रभाव स्वभाविक तौर पर उसके उद्देश्य के अनुरूप भिन्न-भिन्न होता है । मोटे तौर पर यह कहा जा सकता है कि राज्यकीय सद्भावना यात्राओं से विचारो के आदान प्रदान का और दूसरे देशों के साथ संबंध दृढ़ करने का उद्देश्य पूरा होता है । द्विपक्षीय अथवा बहुद्देशीय वार्ताओ के लिए जो प्रतिनिधिमंडल भेजे जाते है वे आमतौर से किसी उद्देश्य विशेष के लिए होते है, जैसे किसी समझौते पर बातचीत करने अथवा उस पर विचार विमर्श करने के लिए अथवा विशिष्ट द्विपक्षीय या बहुपक्षीय समस्याओं पर विचार विनिमय करने के लिए, किन्तु इन सभी यात्राओ का एक समान उद्देश्य यह होता है कि विभिन्न रीतियो से अपने राष्ट्रीय हितों का सवर्धन हो ।

†[ ] Hindi translation.

श्री मान सिंह वर्मा : श्रीमन्, माननीय मंत्री जी का वक्तव्य मेरे सामने है । राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति को प्राय: ससार मे जाना पड़ता है, विदेशों में जाना पड़ता है, विदेशों मे प्रधान मन्त्री या विदेश मंत्री का काम भी पड़ता है, इनका जाना आवश्यक होता है, परन्तु यहा पर मै देखता हूं, इस वक्तव्य को पढ़ कर ऐसा लगता है कि इस बात के लिए प्रयत्न किया जाता है कि प्राय. प्रत्येक मत्री को ससार का भ्रमण करा दिया जाये । जिस देश की एक तिहाई जनता ऐसी हो कि जो सामान्य स्तर से बहुत नीचे स्तर पर जीवन निर्वाह कर रही हो वहा पर एक-एक मंत्री के ऊपर, जैसा कि वक्तव्य में बताया है 63,000 रुपये, 34,000 रुपये, 45,000 रुपये या 65,000 रुपये खर्च हो या जैसे कि श्री शाहनवाज खां के ऊपर 24 हजार रुपये खर्च हुए, श्री बरकतुल्ला खां चीफ मिनिस्टर है और उनके ऊपर 33 हजार रुपये खर्च हुए । यह इस प्रकार से जो खर्च होता है यह बात समझ मे नही आ रही है कि कौन सी ऐसी बाते होती हैं, कौन सी ऐसी मंत्रणायें होती हैं जो कि हजारों लाखों रुपये खर्च करके वह मंत्रणायें की जाती हैं विदेशो में जा कर के ।

तो, श्रीमन्, इस सबन्ध में मै केवल यह जानना चाहूगा कि यह जो वक्तव्य आपने दिया है और जो प्रश्न पूछा गया है उसमे कुछ धनराशि कितनी बनती है और उस धनराशि में जो हमारे राजदूतों के द्वारा खर्च होता है ऐसी विजिट्स के ऊपर वह भी उसके अन्दर शामिल है या नही शामिल है ?

श्री सुरेन्द्र पाल सिंह : सभापति महोदय, इस हद तक माननीय सदस्य सही कह रहे है कि इस स्टेटमैन्ट मे मिनिस्टर्स की एब्राड विजिट्स काफी हैं लेकिन वह यह मालूम करने की कोशिश नही कर रहे है कि ये विजिट्स क्यों हुई । यह वह पीरियड है, वह जमाना है, जब कि बंगला देश का मामला चल रहा था, उस

जमाने मे सरकार ने जरूरी समझा था कि हमारे डेलिगेशन्स हाई लेवल पर सब मुल्को मे जाये और अपनी सब बातो को समझाये और यह जरूरी समझा गया कि जो हमारे राजदूत है उनके केवल कहने से काम नही चलेगा बल्कि यहा से स्पेशल डैलीगेशन जाये और वह वहा अपनी बात को अच्छी तरह से समझाए । इस वजह से उस जमाने मे ये डैलीगेशन्स गये ।

जहा तक कि तमाम खर्चे की बात है तो स्टेटमैंट मे सब खर्चा दिया हुआ है कि कितना-कितना खर्चा कहा-कहा हुआ है उसको माननीय सदस्य जोड सकते है ।

श्री मान सिंह वर्मा जोडने का काम मेरे ऊपर दे दिया, यह आपको करना चाहिए था । खैर, मैंने यह पूछा है कि आपके राजदूतो के द्वारा आपके इम्बैसीज के द्वारा, वहा पर जो खर्चा होता है इन विजिट्स के ऊपर वह भी इसमे शामिल है या नही । पहले आप यह बताइये तो फिर मै दूसरा सवाल करूगा ।

श्री सुरेन्द्र पाल सिंह वह खर्चा इसमे शामिल नही है । वह खर्चा है जो कि डेलिगेसस के जाने पर हुआ है । सभापति महोदय, मै एक बात साफ कर दू । बहुत सी बाते ऐसी होती है--यह सही बात है कि हमारे राजदूत वहा काम करते है और जो गवर्नमेंट का व्यु-प्वाइट होता है, गवर्नमेट की पालिसी होती है, उसको इटरप्रेट करते है, बताते है लेकिन जिस वक्त ऐसा मौका आता है, ऐसी उलझन होती है कि जिन्हे समझाने के लिए यहा से डेलिगेशन्स को भेजना जरूर होता है जहा वह काम हमारे डिप्लो-मैट्स नहा कर पाते है , उनका इम्पैक्ट पूरी तरह से अच्छा नही हो पाता है तो खास तौर से इस काम के लिए डेलिगेशस भेजे जाते है ताकि उसका लाभ हो और उसका इम्पैक्ट हमेशा अच्छा होता है ।

श्री सभापति वर्मा जी, दूसरा सवाल पूछ लीजिये, जल्दी पूछिये । आपने छ सात मिनट ले लिये है ।

श्री मान सिंह वर्मा श्रीमन्, बहुत छोटा सा प्रश्न है । भारत की सास्कृतिक परम्पराओ को, आदर्शो को, हम विदेशो मे स्थापित कर सके, वहा अपने आदर्श का उपस्थित कर सके, इस दृष्टि मे कितने और किस प्रकार के डेलिगेशस विदेशो मे भेजे गये है ?

श्री सुरेन्द्र पाल सिंह सभापति महोदय, इस किस्म के डेलिगेशन्स ज्यादातर तो मिनिस्ट्री आफ एजूकेशन भेजती है, कुछ हमारी मिनिस्ट्री भी भेजती है, हमारे पास वह ब्यौरा नही है लेकिन बाकी जो कुछ इस साल के अन्दर जितने डेलिगेशन्स हमारी मिनिस्ट्री ने स्पौन्सर किए है वह सब स्टेटमेण्ट में मौजूद है ।

डा० भाई महावीर श्रीमन, मै दो नुक्तो पर मंत्री जी का स्पष्टीकरण चाहता हू । पहला तो यह कि जो 38वी मद है उप-राष्ट्रपति और उनके दल को इनके ऊपर केवल 450 रुपये ही खर्च हुये है ।

श्री नवल किशोर बडा सस्ता हुआ है ।

डा० भाई महावीर तो मै जानना चाहता हू कि क्या उपराष्ट्रपति की किसी विशेषता के कारण इतना खर्चा हुआ है या यह कि सरकार ने किसी और तरीके से किया, क्योकि एक-एक मंत्री के जाने के लिये इससे बीस-बीस गुना या पच्चीस-पच्चीस गुना खर्चा हुआ है । तो यहा इतना कम क्यो हुआ है ।

दूसरी 33वी मद है--हज डेलिगेशन के ऊपर 26,500 रु० खर्च हुये । मै जानना चाहता हू कि क्या सरकार ने अधिकृत तौर पर, सरकारी तौर पर हज डेलिगेशन भेजना शुरू किया है और यह कब से शुरू किया है और क्या यह हमारी सेकुलरिज्म की धारणा के अनुसार ठीक है कि सरकार किसी ऐसे धार्मिक अनुष्ठान के लिए डलिगेशन भेजे अपने खर्चे पर ।

श्री सुरेन्द्र पाल सिंह सभापति महोदय, यह तो कहना मेरे लिए मुश्किल होगा कि हज का डेलिगेशन कब से शुरू हुआ वहा जाना लेकिन पिछले छ सात साल से मै देखता हू डेलीगेशन जाता है और उसके कोई अपनी

सेकुलर नीति के खिलाफ बात नहीं है। इस मुल्क में हमारे बहुत से मुसलिम भाई भी रहते हैं। यह सही है, हज के मौके पर, चूंकि वह बड़ा इम्पार्टेन्ट मौका होता है, बहुत सारे मुसलमान लोग इकट्ठा होते हैं और हमारे यहां के लोग उसमें जाया करते हैं। उससे अन्डरस्टैंडिंग अच्छी पैदा होती है।

डा० भाई महाबीर : श्रीमन्, यह गोलमोल जवाब दिया है--मुसलमान भाई रहते हैं, अंडरस्टैंडिंग ठीक रहती है, अच्छा मौका रहता है। मैं जानना चाहता हूं कि क्या अगर कल कोई बौद्ध सम्मेलन हो या बौद्ध उत्सव हो तो उसके लिए क्या सरकार आफिशियल तौर पर सरकारी डेलिगेशन वहां भेजने का इरादा रखती है और क्या अब तक ऐसा कोई भेजा गया है, और दूसरे मैंने मंत्री जी से सवाल पूछा था (*Interruption*) उसका जवाब तो दिलवाइये।

श्री सुरेन्द्र पाल सिंह : किस बात के लिए जवाब चाहते हैं।

डा० भाई महाबीर : क्या सरकार की यह नीति है कि किसी देश के किसी धार्मिक अनुष्ठान के मौके पर या किसी धार्मिक उत्सव पर अपना अधिकृत आफिशल डेलिगेशन भेजेंगे कल मान लीजिये, अगर बौद्धों का कोई अन्तर्राष्ट्रीय और धार्मिक मजहबी सम्मेलन हो तो क्या इस तरह से लोग उसमें भेजे जायेंगे और क्या इस संबध में अब तक कोई और डेलिगेशन भेजे गए या नहीं और उसका औचित्य क्या है। तीसरा सवाल यह है कि इतने सस्ते में डेलिगेशन कैसे चले गए ?

श्री सुरेन्द्रपाल सिंह : सभापति महोदय, अगर वाइस प्रेसीडेंट के ऊपर इतना कम खर्च हुआ है तो इसके माने यह नहीं है कि हम उसकी इज्जत नहीं करते हैं। यह तो एक स्टेट विजिट थी, नजदीक के मुल्क में गए थे, अपने हवाई जहाज से गए थे, स्टेट गेस्ट थे। इसलिए ज्यादा खर्चा नहीं हुआ।

श्री सभापति : आप पहले कहते तो हम ज्यादा खर्च कर आते।

डा० भाई महावीर : मेरा तो प्रश्न यह था कि जिस विशेषता के कारण वह काम इतने कम खर्च में हो गया वह बाकी जगह भी इस्तेमाल किया जाए, लेकिन मेरे उस सवाल का जवाब तो रह गया कि अगर कोई बौद्ध सम्मेलन हो या कोई ऐसा ही धार्मिक उत्सव हो, तो क्या उसके लिए भी डेलीगेशन भेजा जाएगा ?

श्री सुरेन्द्र पाल सिंह : श्रीमन्, यह एक हाइपोथेटिकल क्वेश्चन है। जब मौका आएगा तब देखेंगे।

SHRI B. K. KAUL: I would like to know the number of persons comprising each delegation and how many of them belong to parties other than the CPI and the ruling party.

SHRI SURENDRA PAL SINGH: It is difficult for me to give the composition of each delegation as to how many people accompanied each delegation but, generally speaking, only those people.... (*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: Order please.

SHRI SURENDRA PAL SINGH:.... belonging to the ruling party are sent on behalf of the Government, apart from the officials. And it is not correct for the hon. Member to say that we are sending C.P.I. members, etc....

SHRI B. K. KAUL: I only wanted to know; I did not say CPI and members of the ruling party...(*Interruptions*)...There is no motivation behind it.

(*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: I think the question has been answered.

श्रीमती लक्ष्मी कुमारी चूडावत : क्या यह सही है कि इस प्रकार के सांस्कृतिक डेलिगेशन जो सरकार के द्वारा भेजे जाते है वह यूरोप के मुल्कों में भेजे जाते हैं, अपने पड़ोसी मुल्क, एशिया और अफ्रीका के छोटे-छोटे मुल्कों की ओर हम इस मामले में आगे नहीं बढ़े हैं, क्या इसका कारण यह नहीं है कि

हिन्दुस्तान और उन पडोसी मुल्कों के बीच मे आपस मे सास्कृतिक आदान-प्रदान या एक दूसरे के बारे मे जानकारी बहुत कम है और इसलिए हमे राजनैतिक लाभ भी नही मिल पाता है ।

श्री सुरेन्द्र पाल सिंह सभापति महोदय यह बिल्कुल सही नही है कि हमारे सास्कृतिक या हमारे कल्चरल डेलिगेशन सिर्फ यूरोप ही जाते है । यूरोप भी जाते है लेकिन साथ-साथ ऐसा भी है कि साउथ ईस्ट इडिया और अफ्रीका के मुअत्तिल मुल्को मे जाते है ।

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही श्रीमन्, बहुत महत्वपूर्ण बात है कि आज जबकि हम सेक्युलेरिज्म की ओर बढने की कोशिश कर रहे है उस समय मैं विरोधी पक्ष को भी कहता हू कि विरोधी पक्ष भी मुसलिम वोट को पकडने के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार है

श्री सभापति आप इसके मुताल्लिक सवाल कीजिए ।

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही इसी के मुताल्लिक कह रहा हू । आप गौर करे कि 8 नं०, 9 नं० और 10 न० के आगे क्या है । 8 नम्बर पर श्री बरकतउल्ला खान, 9 नम्बर पर मोइनुल हक चौधरी और 10 नम्बर पर फखरुद्दीन अली अहमद साहब है । यो तीनो व्यक्ति मस्लिम कन्ट्रीज मे भेजे गए है ।

श्री अजित प्रसाद जैन : तो इसमे क्या हर्ज हो रहा है ?

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही इस इरादे से कि अगर मुसलमान जाएगा तो मुसलमानो पर असर होगा । मै श्रीमन्, मन्त्री महोदय से जानना चाहता हू कि इस तरह की भावना, जिस भावाना से अपना विरोधी पक्ष भी काम करता है सरकारी पक्ष भी काम करता है , मुसलमानो को खुश करने के लिए . . .

श्री सभापति : आप दोहराये चल जा रहे ओर किसी को बोलने नही देंगे ।

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही : आपने बगला देश के इश्यू के ऊपर देख लिया कि कित मुस्लिम कट्रीज ने आपका साथ दिया ।

श्री सभापति I will not allow this यह सवाल पूछने का वक्त है लेक्चर देने का वक्त नही है ।

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही : तो मै यह जानना चाहता हू कि तीन मुसलमान मत्रियो को मुस्लिम मुल्क मे भेजना, क्या यह आपकी सिक्यूलरिज्म नीति के पक्ष मे है ?

श्री मन्, आप ग्यारह नम्बर पर देखेंगे तो श्री कुमारमगलम , जो कार्ड होल्डर मिनिस्टर है

श्री सभापति अगर आप इतना वक्त एक सवाल करने मे लगायेंगे तो मै आपको रोक दूगा । मैं एक दो और सदस्यों को बुलाना चाहता हू और आप इतना समय एक सवाल करने पर लगा रहे है ।

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही : तो मै यह जानना चाहता हू कि उन्हे कम्यूनिस्ट कट्रीज मे भेजा गया, तो आपकी नीति क्या है ।

श्री सुरेन्द्र पाल सिंह : सभापति महोदय, यह तो गवर्नमेट का जजमेट है, यह गवर्नमेट का पिरोग्रेटिव्ह है कि वह किस को कहा भेजे और जिस को वह ज्यादा मुनासिब समझती है, उसी को वहा भेजती है ।

श्री हर्षदेव मालवीय : श्रीमन्, मै यह जानना चाहता हू कि जो सीरियल नम्बर 49 मे दिया गया है, उससे मालूम पडता है कि एक आर्थिक प्रतिनिधि मडल नाईजीरिया भेजा गया जिस पर 18 लाख 890 हजार रुपया खर्च हुआ, तो मैं इस प्रतिनिधि मडल के मुताल्लिक जानकारी चाहूगा ।

श्री सुरेन्द्र पाल सिंह सभापति महोदय, मालूम पडता है माननीय मेम्बर को फिगर पढने मे गलती हो गई है जिसकी वजह से उनके दिमाग में यह बात आई । अगर वे 18 लाख रुपये की जगह सही फिगर पढते तो वे ऐसा सवाल नही पूछते ।

SHRI C. D. PANDE: May I know from the hon. Minister whether it is not a general practice that when the Ministers go abroad, they are looked after by the Embassies, their hotel bills are paid by the Ambassadors, their cars are retained on daily basis and their food is paid by the Ministry? That amount is not debited to the particular visit of the Minister but to the Foreign Affairs Ministry's general budget. If this was not so, how could the expenditure of Dr. Karan Singh who went to some East European countries be only Rs. 1500? Even the return air fare is more than Rs. 1500. Does the hon Minister know that even one day's expenditure in a posh hotel of London is 35 pounds and it does not include food? How is it then that the expenditure is only Rs 1500 when Dr. Karan Singh or others go there by air, come back by air and stay there in hotels? May I know whether the expenditure made by the Embassies is included in this?

MR. CHAIRMAN: I cannot allow that. If you go on repeating your question, I cannot call anybody. You have taken more than 15 minutes over this Question.

SHRI SURENDRA PAL SINGH: I have not got the details in my possession as to how this expenditure was incurred and what the break-up and details are but what I can say that the delegations which go abroad, whether they are official, non-official or Ministerial, are given a certain daily allowance and that daily allowance is included in this.

SHRI MAHAVIR TYAGI: This question has not been properly replied to. You have to say whether the air fare etc., is included or not.

MR. CHAIRMAN: He says, it is not included.

SHRI MAHAVIR TYAGI: Why not?

MR. CHARMAN: I have not called you to ask a question.

SHRI MAHAVIR TYAGI: It is a question of privilege. He is giving a reply which is wrong and incorrect.

SHRI SURENDRA PAL SINGH: What is it exactly?

MR. CHAIRMAN: He wanted to know whether the expenditure incurred on a Minister by the Embassy is included or not.

SHRI SURENDRA PAL SINGH: No, Sir.

SHRI MAHAVIR TYAGI: This is a wrong reply. Please read the Question. Is it possible that he could exclude the same from his reply?

MR. CHAIRMAN: Now, please sit down. Next Question.

SHRI SITARAM KESRI: Sir, for the fault of others you are punishing us. I want to ask one question.

MR. CHAIRMAN: No, no, you are not punished.

विस्थापितों का पुनर्वास

*636. **श्री रत्तन लाल जैन :**
श्री जगदीश प्रसाद माथुर : †
श्री जगदम्बी प्रसाद यादव :
श्री ओ३म प्रकाश त्यागी :
श्री वीरेन्द्र कुमार सखलेचा :

क्या श्रम और पुनर्वास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) 1947 से लेकर अब तक ऐसे कितने व्वस्थापित व्यक्ति पाकिस्तान से भारत आये है जिनका पुनर्वास किया जाना और जिन्हें क्षतिपूर्ति का दिया जाना अभी शेष है ; और

(ख) उनका शीघ्रता से पुनर्वास करने के लिये उठाये जा रहे कदमो का ब्यौरा क्या है ?

†The question was actually asked on the floor of the House by Shri Jagdish Prasad Mathur.